भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-18 अंक-3 | वि. स. 2079 | युगाब्द 5124 | मई-2022 | डिजिटल संस्करण

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/-

मार्गदर्शक :
- डॉ. कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेवशर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :
- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :
- राजेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :
- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :
- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :
भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निराला नगर,
लखनऊ, उ.प्र.-226020
दूरभाष: 0522-4001837,
0522-2789406
मो: 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :
E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
मो : 9811068375

आलोकः प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक सहयोग राशि : रु 5000/-

भगवान परशुराम

ऋषिवर श्री जमदग्नि के, वीर पुत्र भगवान।
परशुराम साधक परम, थे शिव भक्त महान।।
प्रखर तेज मुख मण्डल, पर क्रोधी निष्काम।
परशुराम भगवान को, श्रद्धा सहित प्रणाम।।

सेवा संवाद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य

आपकी पत्रिका सेवा संवाद अब डिजिटल रूप में प्रकाशित करने का निर्णय न्यास द्वारा किया गया है। आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें।

पाठकों की कलम से - इस कॉलम के लिए पत्रिका के विषय में या भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों से सम्बंधित आपके अनुभव व सुझाव आमंत्रित हैं। अपना नाम, पता और मोबाइल भी जरूर दें।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 26 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. सचल चिकित्सा सेवा - रु. 11,000 की मासिक धनराशि का सहयोग करके एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. नेत्र चिकित्सा सेवा - रु. 5000 की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. विकलांग सहायता सेवा - रु. 1,000 से 6,000 तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)- रु. 10,000 से अधिक की धनराशि का अर्पण करके न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. छात्रवृत्ति- न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है - प्राथमिक : रु 3000, माध्यमिक (जू.हा.) : रु 5,000, हाईस्कूल : रु 7,000, इण्टरमीडिएट : रु 8000, आई.टी.आई/डिप्लोमा एवं स्नातक : रु 10,000, परास्नातक : रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु : रु 15,000, इंजीनियरिंग : रु 18,000 और मेडिकल : रु 20,000।
6. सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका) - रु. 1,200 की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. सेवा संवाद (मासिक) - रू. 2,000 की आजीवन एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. माधव सेवा आश्रम - रु. 5,00,000 का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. विश्राम सदन दिल्ली - दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. देवभूमि ऋषिकेश में प्रस्तावित **माधव सेवा विश्राम सदन** के भवन निर्माण हेतू अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है।
11. अक्षय सेवा - दिल्ली में एम्स एवं दो अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 6,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
12. CSR फंड - यदि आपकी फर्म CSR में भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं :

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो, **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेजें।
- अप्रवासी भारतीय भी FCRA के अन्तर्गत दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं., फोन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 6806100009948 (IFSC : BKID0006806)
  - भारतीय स्टेट बैंक, डालीगंज, लखनऊ - खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - बैंक ऑफ इण्डिया, पटपड़गंज, नई दिल्ली - खाता सं. 605810110013350 (IFSC : BKID0006058)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

आज समाज जीवन में चारित्रिक अवमूल्यन इतना हो गया है कि चारों तरफ अनाचार, दुराचार, व्यभिचार, हत्या, लूट-पाट आदि सर्वत्र संकट ही संकट, समस्याएं ही समस्याएं दृष्टिगोचर हो रही हैं। इन समस्याओं के मूल में मनुष्य के अन्दर पलने वाली दुर्भावना अथवा विचार-विकृति ही कारण है क्योंकि किसी भी क्रिया को कार्यरूप प्रदान करने से पूर्व हर कोई अपने मन-मस्तिष्क में कार्य की रूपरेखा बना लेता है। अस्तु अमानवीय कार्य विचार-विकृति, दुर्भावना अथवा दुष्प्रवृत्तियों का ही परिणाम है।

हमारे मन में अच्छे विचार कैसे उत्पन्न हों और इसके लिए क्या करना चाहिए? इस प्रकार के सन्दर्भ में आचार्य श्रीराम शर्मा का कहना था कि 'हमें ज्ञान यज्ञ और विचार क्रान्ति को ही इस युग की सर्वोपरि आवश्यकता एवं समस्त विकृतियों की एक मात्र चिकित्सा मान कर चलना चाहिए और उन उपायों को अपनाना चाहिए जिनसे मानवीय विचारणा एवं आकांक्षाओं को निकृष्टता से विरत कर उत्कृष्टता का स्तर उन्मुख किया जा सके। कल्याण, परमार्थ अथवा सेवा मार्ग पर चलने वाले हर उस व्यक्ति का यह धर्म है कि स्वार्थ, छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष, मद-मत्सर, मोह आदि दुर्भावनाओं से स्वयं को बचाते हुए ज्ञानयज्ञ का उपासक बने। सत्साहित्य का अध्ययन करते हुए दूसरों को पढ़ने के लिए प्रेरित करे।

महात्मा कबीर ने इससे भी ऊँची एक और बात **"ढाई आखर प्रेम"** की कही है। प्रेम सृष्टि के मूल में विद्यमान है। प्रेम एक दिव्य गुण है। यदि मनुष्य प्रेम करना सीख जाए और प्रेम का संचार करने लगे तो धरती पर सामाजिक, वैयक्तिक और सामूहिक बुराइयाँ दूर होने लगें। प्रेम के साथ त्याग, कृपा, स्पर्धा, सहिष्णुता, सहजता, क्षमा, करुणा, निष्कामता, भक्ति, उदारता, सहनशीलता, उपकार, परोपकार, राष्ट्रीयता, साधुता, सद सद्भावना, तृप्ति, सत्य, धर्म, कर्म, अनासक्ति, पूजा, संवेदना, एक्यभाव, संकल्प, अनुशासन, निग्रह आदि गुण स्वतः चले आते हैं। तभी तो कहावत प्रसिद्ध है - **"एकै साधे सब सधै।'** यदि एक प्रेम को साध लिया जाए तो शेष सभी स्वयं सध जायेंगे। अर्जुन ने एक कृष्ण का हाथ पकड़ा, संसार के सब सुख उस की झोली में आ गए। एक प्रेम को अपनाने से सारी दिव्य शक्तियां और शुभ प्रवृत्तियां हर पल सहयोग प्रदान करेंगी। इन्हीं शुभसंकल्पों के साथ हम सेवा कार्य में दृढ़ता से जुट सकें इस मनोभाव के साथ मई मास का यह अंक आप को समर्पित है।

-शिव

सेवा परमो धर्मः

जन्माष्टमी को गोधुलि का समय था। सात साल की मुनिया हाथ में पूजा की थाली लिये मंदिर की तरफ़ तेज़ कदमों से चली जा रही थी। उसने अपने कान्हा के लिये माला बनाई थी। मंदिर में भीड़ के एक ज़ोरदार झटके से उसकी पूरी थाली गिर गयी। अब उसके हाथ में केवल दक्षिणा के पैसे थे, 20 रुपये , जो उसे चैत्र नवरात्र के दौरान कन्या भोजन में मिले थे। उसने सोचा था अपने कान्हा को अर्पित कर देगी अपने बचाए हुए पैसे। मुनिया आँख में आँसू लिये भीड़ को चीरती हुई बाहर आई और एक कोनें में बैठ कर रोने लगी। तभी कहीं से एक रोता हुआ बच्चा आया, करीब दो -तीन साल का। अकेला था। तभी उसकी नज़र बच्चे के खून-सने घुटनों पर पड़ी । वह बुरी तरह ज़ख्मी था । मुनिया ने अपने बहते आँसू भूलकर उस बच्चे की आँखें पोंछी और उसे गोद में उठा कर पास के दवाई के दुकान में पहुँची। उसने दक्षिणा के 20 रुपये देकर थोड़ी सी रूई की फाहें, एक पट्टी और डितोल ली। उधर मंदिर में बिहारी जी का अभिषेक हो रहा था इधर छोटी सी मुनिया उस बच्चे के खून से लथपथ घुटने धो रही थी। उधर बिहारी जी को चंदन लगाया जा रहा था, इधर मुनिया रूई डिटौल में डूबो कर बच्चे के घुटनों पर लगा रही थी। उधर बिहारी जी को सफ़ेद फूलों के हार से सज्जित किया जा रहा था, इधर मुनिया भरसक कोशिश में लगी थी कि किसी तरह सफ़ेद पट्टी बच्चे के घुटने पर बाँध दे। बच्चा अब नहीं रो रहा था, बल्कि मुनिया की तरफ़ देख कर मुस्कुरा रहा था। जैसे-तैसे पट्टी बाँधकर मुनिया ने उसकी ओर देखा और वह भी मुस्कुरा दी । पीछे कृष्ण जी के मंदिर से एक आवाज़ आई, "बोलो बांके-बिहारी लाल की जय।"

समर्थ भारत

मालवीय नगर में शिविर

बी एल वर्मा फाउंडेशन की तरफ से दिनांक – 24 अप्रैल 2022, दिन रविवार, को स्थान – अंध विद्यालय इंदिरा कैंप, बेगमपुर, मालवीय नगर में फ्री डेंटल एवं नेत्र चेकअप कैंप एवं चश्मा वितरण का आयोजन किया गया था। इस शिविर में आये लोगों को समर्थ भारत का एक स्टाल लगाकर दक्षिणी विभाग तथा आर के पुरम विभाग में चल रहे प्रशिक्षण केंद्र तथा कोर्स की जानकारी दी गयी तथा प्रशिक्षण करने हेतु आग्रह भी किया गया।

इस शिविर में करीब 150 लोग उपस्थित रहे। उनमें से हमारे मालवीय नगर प्रशिक्षण केंद्र में प्रशिक्षण हेतु कुल 8 पंजीकरण हुए जिसमें से ब्यूटिशियन के लिए 3 तथा हेयर स्टाइलिस्ट के लिए 5 पंजीकरण हुए।

समर्थ भारत प्रियंका कैंप केंद्र का उद्घाटन समारोह

19 अप्रैल 2022 , मंगलवार को प्रातःकाल 9 बजे श्री कृष्ण विद्या मंदिर, प्रियंका कैंप, मदनपुर खादर, नई दिल्ली में समर्थ भारत प्रियंका कैंप केंद्र का उद्घाटन हुआ कार्यक्रम में अध्यक्षता - श्रीमान रमेश अग्रवाल जी (अध्यक्ष, सेवा भारती, दिल्ली प्रान्त) ने की। मुख्य अतिथि थे झारखंड के सह प्रान्तकार्यवाह श्रीमान राकेश लाल जी । कार्यक्रम में मुख्य वक्ता थे दिल्ली के प्रान्त कार्यवाह श्रीमान भारत भूषण जी । दिल्ली में दक्षिणी विभाग के विभाग कार्यवाह श्री रविप्रकाश जी और इसी विभाग में सेवा भारती के विभाग अध्यक्ष डॉ अनंगपाल जी विशिष्ट अतिथि के नाते से

उपस्थित रहे। साथ ही कार्यक्रम में डॉ. नरेन्द्र सत्या गर्ग जी की गरिमा मयी उपस्थिति भी रही। पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट डॉ. नरेन्द्र सत्या गर्ग जी ऑक्सफ़ोर्ड एंजेल पब्लिक स्कूल छतर पुर से हैं और NVM & Company के मैनेजिंग पार्टनर भी हैं। श्री इन्द्रनील जी (दक्षिणी विभाग मंत्री) सेवा भारती से भी पूर्ण सहयोग मिला। इस केंद्र में

महिलाओं के लिए ब्यूटिशियन और स्पा थेरापिस्ट तथा पुरुषों के लिए हेयर स्टाइलिस्ट, स्पा थेरापिस्ट और एसी, रेफ्रीजिरेटर तकनीशियन का प्रशिक्षण दिया जाना है। महिलाओं के ब्यूटिशियन कोर्स के लिए 20 प्रशिक्षार्थियों का पंजीकरण पूर्ण हो चुका है तथा उनका प्रशिक्षण भी प्रारंभ हो गया है।

कोंडली केंद्र

विषय – ब्यूटी (दूसरा बैच) – वधु का मेकअप

ब्यूटिशियन के दूसरे बैच का सर्टिफिकेट वितरण कार्यक्रम

Certificate Distribution Beautician 2nd Batch – 30.04.2022

न्यू अशोक नगर केंद्र – AC के दूसरे बैच का सर्टिफिकेट वितरण कार्यक्रम

·New Ashok Nagar Centre – AC 2nd Batch Certificate Distribution (30.04.2022)

मालवीय नगर केंद्र

ब्यूटी –दूसरा बैच - हेयर स्टाइल

सेवा भारती सामूहिक विवाह समारोह में हमारे प्रशिक्षार्थियों द्वारा तैयार की गई वधु

कड़कड़डूमा केंद्र

ब्यूटी – पहला बैच - आँखों की सज्जा

रघुवीर नगर केंद्र

ब्यूटी – पहला बैच - हेयर रीबोंडिंग

प्रशिक्षार्थियों द्वारा वधु सज्जा

महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प

प्रगति समीक्षा (अप्रैल)

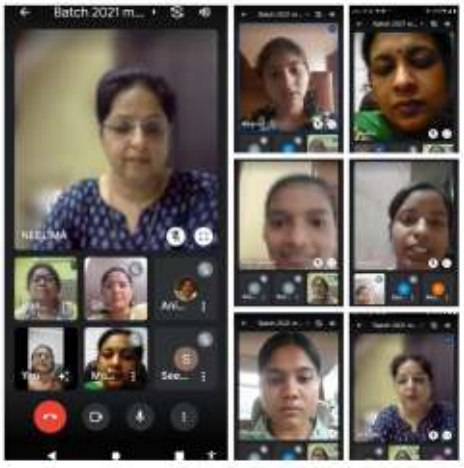

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प धीरे धीरे अपनी नींव मजबूत कर रहा है। यहां इंजीनियरिंग व मेडिकल जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवाने के साथ साथ छात्राओं को समयानुसार अन्य आवश्यक परीक्षाओं की जानकारी भी दी जाती है। वर्तमान शैक्षणिक सत्र से विश्वविद्यालय स्तर पर किसी भी कालेज में प्रवेश लेने हेतु CUET परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य है। दिनांक 24.04.2022 को CUET से संबंधित सभी तरह की जानकारी देने व शंका निवारण हेतु प्रकल्प में अध्ययनरत बालिकाओं के लिए एक आनलाइन सत्र का आयोजन किया गया। इस वेबिनार से जुड़कर छात्राओं ने संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी हासिल की। संस्थान अपनी छात्राओं को हर तरह का सहयोग देने व उनके सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

इसके पूर्व दिनांक 17.04.2022 को माननीय डा. कृष्ण गोपाल जी भाईसाहब के लखनऊ प्रवास की अवधि में एक अनौपचारिक मीटिंग का आयोजन हुआ जिसमें प्रकल्प से संबंधित भविष्य की गतिविधियों पर चर्चा के साथ साथ आने वाले शैक्षणिक सत्र में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं के लिए अस्थाई छात्रावास की व्यवस्था कर offline mode में पढ़वाना सुनिश्चित किया गया।

इसके अतिरिक्त नियमित अंतराल पर mentor-mentee meetings के आयोजन संपन्न हुए, जिनमें छात्राओं से उनकी पढ़ाई से संबंधित किसी भी तरह की परेशानी पर विस्तृत चर्चा करते हुए निवारण का प्रयास किया जाता है।

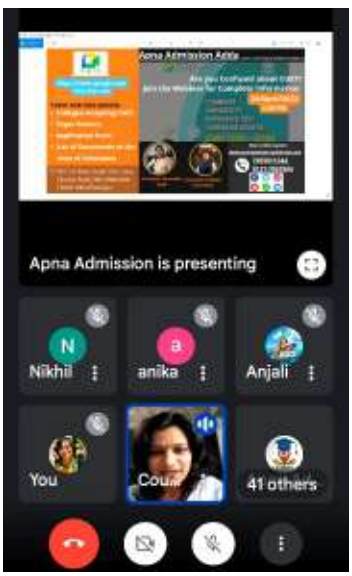

माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश

भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ द्वारा देश में भिन्न भिन्न स्थानों पर प्रमुख अस्पतालों के निकट रोगियों और उनके सहायकों के लिए विश्राम सदन चलाए जा रहे हैं। ये स्थान हैं लखनऊ में SGPGI के निकट, लखनऊ में ही KGMU के निकट, दिल्ली में एम्स के निकट, झज्जर हरियाणा में एम्स के निकट और पटना में IGIMS के निकट जिनमें कुल 2000 के लगभग लोगों के ठहरने की व्यवस्था है।

इसी प्रकार की व्यवस्था ऋषिकेश एम्स के निकट उपलब्ध कराने के लिए न्यास ने एम्स के निकट ही माधव सेवा विश्राम सदन स्थापित करने की योजना की है। इस भवन की वास्तुशिल्प संरचना पारंपरिक भारतीय स्थापत्य के आधार पर है और इसमें 400 से अधिक लोगों के ठहरने के साथ साथ भजन कीर्तन, सत्संग एवं ध्यान के लिए भी उचित व्यवस्था रहेगी। बच्चों के मनोरंजन की भी उचित व्यवस्था की जाएगी ताकि वे अपना समय उचित प्रकार से बिना किसी मानसिक तनाव के व्यतीत कर सकें। इस भवन का लाभ उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले निर्धन लोगों को भी रहेगा जिन्हें रोगी के उपचार के समय खुले में रहने को विवश होना पड़ता है।

- इस भवन का भूमि पूजन व शिलान्यास का कार्यक्रम आगामी 12-13 जून को रहने वाला है जिसमें संघ के पूर्व मा. सरकार्यवाह और वर्तमान में अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य मा. सुरेश भैय्याजी जोशी जी की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी।
- हम सभी के परम सौभाग्य से कार्यक्रम में पूज्य जूनापीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरिजी महाराज जी भी उपस्थित रहेंगे।
- अनेक प्रतिष्ठित साधु संत और समाजसेवी बन्धु भी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहकर कार्यक्रम को भव्य रूप प्रदान करेंगे।
- आप सभी से आग्रह है कि इस पुनीत कार्यक्रम में परिवार और मित्रों सहित आने की योजना करें और पूज्य संतों के दर्शनों का लाभ भी प्राप्त करें। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी जल्द ही मिलेगी।

आपका सहकार

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूजनीय माधव राव जी गोलवलकर की स्मृति में देवभूमि ऋषिकेश में एम्स अस्पताल के निकट माधव सेवा विश्राम सदन की स्थापना प्रस्तावित है। इस सदन का उपयोग साधु संतों, एम्स ऋषिकेश में उपचार के लिए आने वाले रोगियों व उनके सहायकों द्वारा किया जाएगा। यह कार्य आपका अपना ही है, इसे अनुभव करते हुए आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप उदार हृदय से इस सेवा प्रकल्प हेतु यथा संभव सहयोग करें। आपके द्वारा दी गई राशि 80-G के अंतर्गत छूट प्राप्त है। आप CSR फंड के अंतर्गत भी सहयोग कर सकते हैं। आपका यही सहयोग निर्मित होने वाले इस विश्राम सदन के शीघ्रातिशीघ्र साकार रूप लेने में सहायक होगा।

आपके परिवार में सुख-समृद्धि के लिए शुभकामनाएं।

आर्थिक सहयोग के लिए आवश्यक जानकारी :
MCA में न्यास की CSR पंजीकरण संख्या CSR00004454
80G में न्यास की पंजीकरण संख्या AAATB1049GF20217
न्यास की FCRA पंजीकरण संख्या 136550134

भारतीय स्टेट बैंक, केंद्रीय सचिवालय, नई दिल्ली
A/C: 40692412361
IFSC : SBIN0000625

अक्षय सेवा प्रकल्प

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित अक्षय सेवा प्रकल्प के माध्यम से दिल्ली के 3 प्रमुख अस्पतालों के निकट जरूरतमंदों को भोजन वितरण किया जाता है। इस प्रकल्प ने एक नई दिशा और एक नया माध्यम दिया है समाज में समरसता के भाव को प्रकट करने का। जन्मदिन मनाने का एक प्रकार है अपने दोस्तों और सम्बन्धियों के साथ मिलकर खुशियाँ बाँट कर और एक दूसरा प्रकार जो अक्षय सेवा प्रकल्प दे रहा है वो है अपनी खुशी समाज के आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग के साथ मनाने का जिसमें हजारों लोगों का आशीर्वाद और दुआएं मिलती हैं। ऐसा ही किया दूध से बने खाद्य पदार्थों के व्यापारी और प्रसिद्ध समाजसेवी श्री विपिन गुप्ता जी ने जब उन्होंने अपने बेटे समर्थ का जन्मदिन 12 अप्रैल की दोपहर में अक्षय सेवा प्रकल्प के अंतर्गत होने वाले भोजन वितरण में परिवार सहित भाग लेकर मनाया। पूरे परिवार ने बड़े उत्साह के साथ इस शुभ कार्य में भाग लिया। शायद प्रिय समर्थ अपना ये जन्मदिन पूरी उम्र तक याद रखेंगे और आशा है कि इस संस्कार को वो अपने परिवार में आगे बढ़ाएंगे भी। न्यास और प्रकल्प के सभी कार्यकर्ताओं की ओर से प्रिय समर्थ को उनके जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएं।

अक्षय सेवा प्रकल्प को 5 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। न्यास के कोषाध्यक्ष श्री रामअवतार किला जी की पत्नी श्रीमती सुशीला किला जी का इस प्रकल्प से विशेष स्नेह है और वे समय समय पर आकर भोजन वितरण में भाग लेती हैं और प्रकल्प के कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करती हैं। 25 अप्रैल को 5 वर्ष पूर्ण होने के पावन अवसर पर श्रीमती सुशीला किला जी अपने साथ ओखला के SHO की पत्नी श्रीमती नीलम वालिया जी के साथ उपस्थित रहीं। दोनों ने अपने हाथों से भोजन वितरण किया।

पिछले 5 वर्षों में इस प्रकल्प ने अनवरत भोजन वितरण किया है जिसके द्वारा 42 लाख से अधिक लोगों को लाभ मिल चुका है।

प्रकल्प के कार्यकर्ताओं की इच्छा और प्रयास है कि यह कार्य दिल्ली में अन्य स्थानों पर शुरू हो सके और साथ ही अन्य शहरों में भी जरूरतमंद लोग ऐसी सेवा का लाभ प्रकल्प के माध्यम से ले सकें। ईश्वरीय कार्य है तो उसका आशीर्वाद भी प्रकल्प के साथ रहेगा और आशा है कि समाजसेवियों का ऐसा ही प्यार और आशीर्वाद हमें आगे भी मिलता रहेगा जिसके कारण प्रकल्प इस लक्ष्य को भी जल्द ही पार कर सकेगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

पावन स्मृति - मई

पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा की और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया,अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं ऐसे उन सभी दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।

दिनांक	दिवस	महापुरूष/घटना का नाम
2 मई	जन्म-दिवस	आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री
7 मई	जन्म-दिवस	विश्व कवि: रवीन्द्रनाथ टैगोर
10 मई	इतिहास-स्मृति	जब क्रांति का बिगुल बज उठा
15 मई	जन्म-तिथि	अमर बलिदानी: सुखदेव
21 मई	पुण्य-तिथि	स्वदेशी आन्दोलन के प्रवर्तक विपिनचन्द्र पाल
25 मई	जन्म-दिवस	क्रांतिकारी रासबिहारी बोस
28 मई	जन्म-दिवस	क्रांतिकारियों के सिरमौर वीर सावरकर
31 मई	जन्म-तिथि	तपस्वी राजमाता: अहिल्याबाई होल्कर

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री

(2 मई, 1929, 17 अप्रैल, 2005)

कोलकाता में पण्डित गांगेय नरोत्तम शास्त्री तथा श्रीमती रूपेश्वरी देवी के घर में जन्मे आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री साहित्य, संस्कृति और राजनीति के अद्भुत समन्वयक थे। विष्णुकान्त जी की शिक्षा कोलकाता के सारस्वत विद्यालय, प्रेसीडेंसीकॉलेज और फिर कोलकाता विश्वविद्यालय में हुई। 1944 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आये, तो फिर सदा के लिए उससे जुड़ गये। आचार्य जी को जो दायित्व दिया गया, वे उसे राम जी की कृपा मानकर काम में लग जाते थे। 1977 में वे विधायक निर्वाचित हुए। आगे चलकर भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें राज्यसभा में भेजा। तत्पश्चात् हिमाचल प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश में राज्यपाल के पद पर रहे। गीता, भागवत मानस, पुराणों आदि का उनका अध्ययन बहुत व्यापक था। 17 अप्रैल 2005 को रेल यात्रा के समय हुए भीषण हृदयाघात से उनका देहान्त हो गया।

विश्वकविः रवीन्द्रनाथ टैगोर

(7 मई 1861 - 7 अगस्त, 1941)

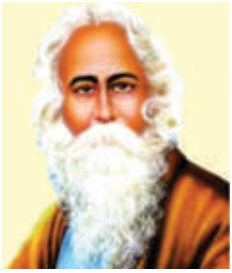

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म कोलकाता में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री देवेन्द्रनाथ तथा माता का नाम श्रीमती शारदादेवी था। बचपन से ही उनकी काव्य में आत्यधिक रुचि थी। उन्होंने लेखन की प्रायः सभी विधाओं में साहित्य की रचना की। वे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि में सिद्धहस्त थे। इसके साथ ही वे उच्च कोटि के चित्रकार, संगीतकार, दार्शनिक व शिक्षाशास्त्री भी थे। सोनार तरी, पुरवी, दि साइकिल ऑफ़ स्प्रिंग, दि ईवनिंग सांग्स और मार्निंग सांग्स उनकी

प्रसिद्ध रचनाएं हैं। उनकी रचनाओं का विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवाद हुआ है। 1913 में गीतों की पुस्तक 'गीतांजलि' के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया। वे शिक्षा को देश के विकास का एक प्रमुख साधन मानते थे। 1915 में अंग्रेजी शासन ने उन्हें 'सर' की उपाधि से विभूषित किया, पर 1919 में जलियाँवाला बाग काण्ड के विरोध में उन्होंने इसका त्याग कर दिया। भारत का वर्तमान राष्ट्रगान "जन गण मन अधिनायक....."रवीन्द्रनाथ का ही रचा हुआ है। गाँधी जी उन्हें सम्मानपूर्वक 'गुरुदेव' कहकर पुकारते थे। जीवन भर साहित्य की सेवा और साधना करते हुए 1941 में विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कोलकाता में ही अंतिम साँस ली।

तपस्वी राजमाताः अहिल्याबाई होल्कर

(31 मई, 1723 - 13 अगस्त, 1795)

बमहारानी अहिल्याबाई होल्कर भारत के मालवा साम्राज्य की महारानी थीं। अहिल्याबाई का जन्म महाराष्ट्र के अहमदनगर में हुआ। गाँव के पाटिल पिता मंकोजी राव शिंदे ने उन्हें लिखने-पढ़ने लायक पढ़ाया। बचपन में ही अहिल्या मालवा के राजकुँवर खाण्डेराव की पत्नी बनकर राजमहलों में आ गयी।

अहिल्याबाई के पति खांडेराव होल्कर1754 के कुम्भेर युद्ध में शहीद हुए थे। 12 साल बाद उनके ससुर मल्हार राव होल्कर की भी मृत्यु हो गयी। इसके एक साल बाद ही उन्हें मालवा साम्राज्य की महारानी का ताज पहनाया गया। उनके एक ही पुत्र था मालेराव जो 1766 ई. में दिवंगत हो गया।

वह हमेशा से ही अपने साम्राज्य को मुस्लिम आक्रमणकारियों से बचाने की कोशिश करती रहीं। युद्ध के दौरान वह खुद अपनी सेना में शामिल होकर युद्ध करती थीं। तुकोजीराव होल्करउनकी सेना के सेनापति थे। रानी अहिल्याबाई ने मृत्यु पर्यन्त बड़ी कुशलता से राज्य का शासन चलाया। उनकी गणना आदर्श शासकों में की जाती है। वे अपनी उदारता और प्रजावत्सलता के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने स्त्रियों की सेना भी बनाई थी।

रानी अहिल्याबाई ने अपने साम्राज्य महेश्वर और इंदौर में बहुत से मंदिरों का निर्माण भी किया था। इसके साथ ही उन्होंने लोगों के रहने के लिए मुख्य तीर्थस्थान जैसे गुजरात के द्वारका, काशी विश्वनाथ, वाराणसी का गंगा घाट, उज्जैन, नासिक, विष्णुपद मंदिर और बैजनाथ के आस-पास बहुत सी धर्मशालायें भी बनवाईं। मुस्लिम आक्रमणकारियों के द्वारा तोड़े हुए मंदिरों को देखकर ही उन्होंने सोमनाथ में शिवजी का मंदिर बनवाया। उन्होंने 1777 में विश्व प्रसिद्ध काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया।

अपने जीवनकाल में ही इन्हें जनता 'देवी' समझने और कहने लगी थी। विकट परिस्थितियों में अहिल्याबाई ने जो कुछ किया वह चिरस्मरणीय है। वे जनता को अपनी सन्तान समझकर सेवा में लगी रहती थीं। 72 वर्ष की आयु में राजमाता अहिल्याबाई का देहान्त हुआ। उनका जीवन धैर्य, साहस, सेवा, त्याग और कर्तव्यपालन का प्रेरक उदाहरण है।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास की योजना से चल रहे विभिन्न विश्राम सदनों में अप्रैल 2021 - मार्च 2022 के दौरान आने वालों की संख्या

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	KGMU, लखनऊ	विश्राम सदन, दिल्ली	IGIMS, पटना	एम्स, झज्जर	TOTAL
1	जम्मू कश्मीर			51		16	**67**
2	हिमाचल प्रदेश			15		3	**18**
3	पंजाब		9	15	3	12	**39**
4	हरियाणा		2	128	4	704	**838**
5	दिल्ली	60	42	94	30	278	**504**
6	उत्तराखंड	75	7	120		40	**242**
7	उत्तर प्रदेश	17138	7136	1589	34	694	**26,591**
8	बिहार	6910	315	1571	11226	142	**20,164**
9	झारखण्ड	531	18	162	1269	3	**1,983**
10	सिक्किम				23	3	**26**
11	नागालैंड				3	1	**4**
12	असम	25		49	2	2	**78**
13	मणिपुर /मिजोरम			8		2	**10**
14	अरुणाचल प्रदेश					4	**4**
15	त्रिपुरा			11		1	**12**
16	मेघालय						**–**
17	प. बंगाल	93	10	102	24	16	**245**
18	ओडिशा/अंदमान	46		41		3	**90**
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना	6		15	6		**27**
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी						**–**
21	कर्नाटक			1	3	1	**5**
22	केरल			3			**3**
23	महाराष्ट्र /गोवा	26	26	4	4	1	**61**
24	मध्य प्रदेश	627	7	410		80	**1,124**
25	छत्तीसगढ़	78	9	25	2		**114**
26	गुजरात	12		11		1	**24**
27	राजस्थान	5	16	296	3	74	**394**
28	अन्य	132	3	8			**143**
	पड़ोसी देश						**–**
29	नेपाल	58	4	65	58		**185**
30	बांग्लादेश						**–**
31	अन्य देश						**–**
	योग	**25822**	**7604**	**4794**	**12694**	**2081**	**52,995**

विभिन्न विश्राम सदनों में अप्रैल - 2022 की उपस्थिति

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	KGMU, लखनऊ	विश्राम सदन, दिल्ली	IGIMS, पटना	एम्स, झज्जर	TOTAL
1	जम्मू कश्मीर			9		1	**10**
2	हिमाचल प्रदेश					1	**1**
3	पंजाब				1	2	**3**
4	हरियाणा			13		153	**166**
5	दिल्ली			8		66	**74**
6	उत्तराखंड	4	5	13		37	**59**
7	उत्तर प्रदेश	1600	836	199	10	160	**2795**
8	बिहार	919	43	192	1398	57	**2599**
9	झारखण्ड	84	6	27		4	**121**
10	सिक्किम	2					**2**
11	नागालैंड						
12	असम						
13	मणिपुर /मिजोरम			3			**3**
14	अरुणाचल प्रदेश						
15	त्रिपुरा			4			**4**
16	मेघालय						
17	प. बंगाल	14		16	5	1	**36**
18	ओडिशा/अंदमान	10		8	3		**21**
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना						
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी	3					**3**
21	कर्नाटक	2			3		**5**
22	केरल						
23	महाराष्ट्र /गोवा	16	5		4		**25**
24	मध्य प्रदेश	69		43	1	16	**129**
25	छत्तीसगढ़	11		5			**16**
26	गुजरात	3					**3**
27	राजस्थान			29		15	**44**
28	अन्य						
	पड़ोसी देश						
29	नेपाल	8		30	1	2	**41**
30	बांग्लादेश						
31	अन्य देश						
	योग (इस मास)	**2745**	**895**	**599**	**1453**	**515**	**6207**
	योग (अप्रैल 22 - मार्च 23)	**2745**	**895**	**599**	**1453**	**515**	**6207**
	एक दिन की औसत उपस्थिति	**344**	**130**	**249**	**157**		

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केन्द्र	अप्रैल	योग अप्रैल 22 - मार्च 23
(सेवा समर्पण संस्थान - बिन्दौवा)	145	145
(51 शक्तिपीठ, बक्शी का तालाब)	37	37
अम्बेडकर नगर		
माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केन्द्र, निराला नगर		
एलोपेथिक	373	373
होम्योपैथिक	236	236
रूग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम - होम्योपैथ	210	210
कुल लाभान्वित रोगी	**1119**	**1119**

देवड़े नेत्र चिकित्सालय

चिकित्सालय में दी गई सेवाएँ

	अप्रैल	योग अप्रैल 22 - मार्च 23
नेत्र परीक्षण	893	893
चश्मा वितरण	434	434
मोतियाबिंद ऑपरेशन	63	63
Fundus Test	48	48
OCT Test	6	6
पैथोलॉजी	23	23

आलोक : नेत्र एवं पैथोलॉजी जांच केवल 20 रूपए के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है।

आप भी लिखें :- सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख (चित्र सहित), सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा संस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं सुझाव आदि सामग्री तथा सेवा संवाद के प्रकाशित अंकों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर हमारा मार्गदर्शन, सहयोग करने का कष्ट करें- सम्पादक।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प

प्रकल्प का नाम	सम्पर्क सूत्र	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ.पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	श्रीमती सीमा अग्रवाल	9335922353
सामाजिक विज्ञान एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
विश्राम सदन, के.जी.एम.यू., लखनऊ	श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल	9415003111
देवड़े नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
सेवा संवाद (मासिक), लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक), लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
विश्राम सदन, एम्स, दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	श्री गौरव गर्ग	9918532007
विश्राम सदन, आई.जी.आई.एम.एस., पटना	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457
विश्राम सदन, एम्स, झज्जर (हरियाणा)	श्री विकास कपूर	9818098600
माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश	श्री संजय गर्ग	9837042952

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस सेवा न्यास सी-91, निराला नगर, लखनऊ-226020 के लिए नूतन ऑफसेट मुद्रण केंद्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226002 से मुद्रित, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सी-91, निराला नगर, लखनऊ-262020 से प्रकाशित - सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी